ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

धीरेन्द्र नाथ मजूमदार : एक नृजाति शास्त्रीय अध्येता

सत्या मिश्रा*

प्रसिद्ध मानवशास्त्री धीरेन्द्र नाथ मजूमदार ने भारतीय समाजशास्त्र के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। इनका जन्म 1903 में पटना, बिहार में हुआ था। मजूमदार अपने बहुआयामी अध्यानों के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने स्नातक की परीक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की एवं परास्नातक की शिक्षा भी मानवशास्त्र विषय में कलकता विश्वविद्यालय से ही ग्रहण की।

डी0एन0 मजूमदार ने अपना प्रथम क्षेत्रकार्य विख्यात नृजातिशास्त्री शरत्चन्द्र रॉय के सान्निध्य में कोल्हन (बिहार) की 'हो' जनजाति का अध्ययन प्रारम्भ किया। 1928 में इन्हें प्रो0 राधाकमल मुखर्जी ने 'प्रिमिटिव इकोनॉमिक्स', (प्राचीन अर्थशास्त्र) के प्रवक्ता के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग में प्राध्यापन हेतु चयनित किया। 1933 में मजूमदार कैम्ब्रिज चले गये जहां से उन्हें 1935 में शोध उपाधि प्राप्त हुई। इनके शोध प्रबन्ध का विषय था '**कल्चरल चेंज अमंग द हो**'। शोध कार्य के दौरान इन्होंने सामाजिक मानवशास्त्र का अध्ययन प्रो0 टी0सी0 हडसन एवं भौतिक मानवशास्त्र का अध्ययन प्रो0जी0एम0 मोरंट (G.M. Morant) के साथ किया। इन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में मैलिनोस्की द्वारा आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया अतः मैलिनोस्की के संरचनात्मक–प्रकार्यवाद का प्रभाव आजीवन इनके अध्ययनों पर रहा। मजूमदार ने प्रो0 आर0 रगलेस गेट्स के सान्निध्य में सीरम विज्ञान (Serology) का अध्ययन भी किया एवं गाल्टन लेबोरेट्री (लन्दन) में कार्य भी किया। इन्होंने देश–विदेश के अनेक अकादमिक एवं प्रशासनिक पदों को भी

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, नारी शिक्षा निकेतन पीजी कॉलेज, लखनऊ।

सुशोभित किया। डॉ0 डी0एन0मजूमदार ने 1945 में '**नृजाति शास्त्रीय एवं लोक सांस्कृतिक सभा'** की स्थापना लखनऊ, उत्तर प्रदेश में की। 1946 में इन्होंने पुनः लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग में प्राध्यापक (रीडर) के रूप में पदभार ग्रहण किया और अपने संपादकत्व में 1947 में '**द ईस्टर्न एंथ्रोपॉलॉजिस्ट**' नामक शोध पत्रिका की नींव रखी। मजूमदार 1950 तक लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के साथ–साथ समाजशास्त्र का भी अध्ययन कार्य करते रहे और 1951 में नवसृजित मानवशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए। 1952–53 में मजूमदार प्राच्य अध्ययनों के लिए अतिथि प्राध्यापक के रूप में कर्नैल विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए तत्पश्चात् इन्होंने मॉरिस ई0 ओप्लर के प्रतिनिधित्व में भारत के फोर्ड फाउंडेशन एवं कर्नैल विश्वविद्यालय के सहयोग से 1953 में स्थापित लखनऊ कर्नैल शोध संस्थान को प्रारम्भ किया (मदन, टी0एन0 एवं सरन गोपालः 1962, प्र0 201–203)। यह उल्लेखनीय है कि लखनऊ कर्नैल प्रोजेक्ट के अन्तर्गत ही डी0एन0 मजूमदार ने उ0प्र0 के लखनऊ जिले की बख्शी का तालाब तहसील के मोहाना (गोहानाकलाँ) गाँव का अध्ययन किया था और उस पर आधारित उनकी पुस्तक 1958 में 'कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज प्रकाशित हुई (मजूमदार, 1958, पृ0 – 06)। 1956 में मजूमदार द्वितीय अखिल भारती समाजशास्त्रीय सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गये। यह आयोजन पटना में किया गया था। धीरेन्द्र नाथ मजूमदार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न मानवशास्त्रीय संस्थानों, परिषदों, संगठनों एवं भारत सरकार के विभिन्न संस्थानों के सर्वोच्च पदों पर आसीन रहे और उनके विकास में सक्रिय योगदान दिया। इनका निधन 31 मई 1960 में लखनऊ, उ0प्र0 में हुआ।

वस्तुतः धीरेन्द्रनाथ मजूमदार मौलिक रूप से मानवशास्त्री थे लेकिन न केवल इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग में 1929 से 1932 के मध्य एवं 1946 से 1950 के मध्य समाजशास्त्र विषय में अध्यापन कार्य किया अपितु इनके द्वारा निष्पादित किये गये अध्ययन

समाजशास्त्र में भी उतने ही उपयोगी सिद्ध हुए जितने कि मानवशास्त्र में।

इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं –

1. रेसेज़ एण्ड कल्चर ऑफ इंडिया (1944)
2. द मैट्रिक्स ऑफ इंडियन कल्चर (1946)
3. रूरल प्रोफाइल्स (संपादित) (1955)
4. कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज (1958)
5. भारतीय संस्कृति के उपादान (1958)
6. सोशल कांन्चर्स ऑफ एन इंडस्ट्रियल सिटी (1960)
7. एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपॉलॉजी (1960) (सह–लेखक, टी0एन0 मदन)
8. रेस एलेमेंट्स इन बंगाल (सह–लेखक सी.आर. राव), 1960
9. हिमालयन पोलैंड्री
10. अ विलेज ऑन द फ्रिंज
11. छोर का एक गाँव (1960)
12. प्राग्तिहास (सह–लेखक, गोपाल सरन)

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त डी0एन0 मजूमदार के अनेक शोध आलेख विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए (मदन, टी0एन0 एवं सरन, गोपाल : 1962, पृ0 204–212)। मजूमदार द्वारा प्रतिपादित जाति, जजमानी, जनजाति, गाँव, भारतीय संस्कृति सम्बन्धी बहु आयामी अध्ययन समाजशास्त्रीय शोध के क्षेत्र में अध्ययन सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

मूल रूप से मानवशास्त्र में प्रशिक्षित मजूमदार ने भौतिक एवं सांस्कृतिक मानवशास्त्र के अतिरिक्त ग्रामीण समाजशास्त्र और औद्योगिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में भी अध्ययन किये हैं। इस दृष्टि से भारतीय मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र में उनका योगदान बहुविध है। उन्होंने जनजातियों, कृषक समाजों (ग्रामों) के साथ–साथ कानपुर जैसे औद्योगिक

नगर का अध्ययन कर भारतीय नृ–विज्ञान की शोध सीमाओं को विस्तृत किया है। जनजातियों के सांस्कृतिक प्रतिमानों, सांस्कृतिक परिवर्तन, पर संस्कृतीकरण के प्रभावों के अतिरिक्त संक्रमण के दौर से गुजरती हुई जनजातियों जैसे अनेक विषयों का अध्ययन कर शोध के कई नये मानदण्ड स्थापित किये है। सामाजिक–सांस्कृतिक मानवशास्त्र के क्षेत्र के अतिरिक्त उनका भौतिक मानवशास्त्र के क्षेत्र में पूरा–पूरा दखल था। उन्होंने जैवमितीय माप, सीरमी सर्वेक्षण और उत्खनन कार्य करके अपने आपको एक भौतिक मानवशास्त्री के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने प्रजातिक रचना एवं सामाजिक संस्तरण के मध्य सह–संबंध की संभावनाओं को भी टटोला है।

मजूमदार ने उत्तर प्रदेश के जाति–संस्तरण के अध्ययन हेतु जैवमितीय मापदण्ड का प्रयोग किया है। उनके अनुसार, ऐसी जातियाँ जो एक गुच्छे के रूप में आपस में गुँथी–बँधी होती हैं, वे पद सौपानिक संगठन में एक दूसरे के निकट होते हैं। ऐसी जातियाँ जैवमितीय भिन्नता में भी परस्पर निकट होती हैं। इस प्रकार अविभजित बंगाल और गुजरात की जातियों में भी मजूमदार ने सामाजिक क्रम विन्यास एवं प्रजातिक विशेषताओं के बीच एक प्रकार का सह–सम्बन्ध पाया है। यद्यपि उन्होंने अपने अन्वेषण में जाति–संरचना की रचना में प्रजातिक कारक को महत्वपूर्ण माना है तथापि जाति के उद्‌भव में प्रजातिक कारक को महत्वपूर्ण मानते हुए भी उन्होंने स्पष्ट किया है कि जाति की व्याख्या किसी एक कारक के आधार पर करना निष्फल प्रयत्न है। उन्होंने इसी सन्दर्भ में 'प्रजातिवाद' का घोर विरोध प्रदर्शित किया है। मजूमदार ने मुख्यतः भारत की जनसंख्या में प्रजातीय तत्वों की खोज पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है इसके लिए उन्होंने जैवमितीय माप और रक्त समूहों का परीक्षण किया है। मजूमदार ने बी0एस0 गुहा से असहमति प्रकट की है कि नीग्रोटो भारत की पुरातन प्रजाति है। रक्त समूहों के अपने परीक्षण के आधार पर उन्होंने रेखांकित किया कि भारतीय जनसंख्या में नीग्रीटो प्रजातीय तत्व की उपस्थिति प्रमाणित नहीं होती हैं। मजूमदार ने प्रोटो–ऑस्ट्रेलॉयड या इंडो–ऑस्ट्रेलॉयड प्रजाति को भारत की आदिकालीन

निवासी माना है। शारीरिक मानवशास्त्र के क्षेत्र में प्रजातीय तत्वों के वितरण के अतिरिक्त उन्होंने भारतीय बालकों के विकास (ऑन्टोजेनेटिक) के अध्ययन में भी अपनी रूचि प्रदर्शित की है। इस संदर्भ में लखनऊ नगर के बालकों का उनका अध्ययन उल्लेखनीय है (रावत, हरिकृष्ण, 2014, पृ0 292–293)।

डी0एन0 मजूमदार नृजाति शास्त्रीय समाज वैज्ञानिक के रूप में विख्यात है अर्थात् सांस्कृतिक मानवशास्त्र के क्षेत्र में उनके अध्ययन नृजाति लेखन प्रकृति के रहे हैं और इन्होंने अपने अनेक अध्ययनों में नृजाति विवरणात्मक पद्धति (Ethnography) का प्रयोग किया है जिससे कि अध्ययन समूह का समग्रतावादी एवं लिखित ब्यौरा प्रस्तुत किया जा सके। टी0एन0 मदन एवं गोपाल सरन ने अपनी पुस्तक इंडियन एंथ्रोपॉलॉजी, ऐसेज इन मेमोरी ऑफ डीएनए मजूमदार' में एक मानिचत्र द्वारा मजूमदार द्वाा निष्पादित नृ–जाति विवरणात्मक अध्ययनों को दर्शाया है –

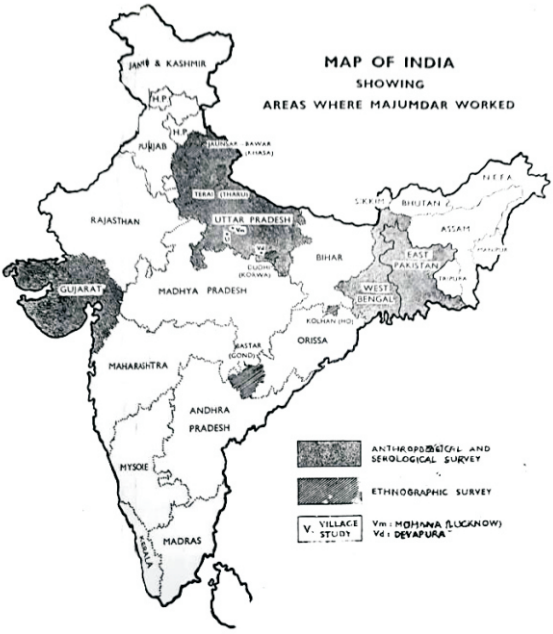

उक्त मानचित्र से स्पष्ट है कि मजूमदार ने दो गांवों, लखनऊ जिले की बख्शी का तालाब तहसील के मोहाना (गोहनाकलाँ) गांव एवं मिर्जापुर की दुद्धी तहसील के देवापुरा एवं धनौरा गाँव के अध्ययन में नृ–जाति शास्त्रीय अध्ययन पद्धति को प्रयुक्त किया है। स्वयं मजूमदार ने 1958 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज' के प्राक्कथन में इसे रेखांकित किया है (मजूमदार, 1958 : पृ0 5)। इसके अतिरिक्त उ0प्र0 के तराई क्षेत्र में थारू जनजाति, पश्चिमी–उत्तरी उ0प्र0 की जौनसार, बावर, खासा जनजाति, मिर्जापुर की दुद्धी तहसील की कोरवा जनजाति, बिहार की कोल्हन की हो जनजाति एवं बस्तर की गोंड जनजाति का भी इन्होंने नृ–जाति शास्त्रीय अध्ययन किया है। ये सभी जनजातीय अध्ययन प्राथमिक तथ्य सामग्री पर आधारित थे (मदन, टी0एन0 एवं सरन, गोपाल : 1962)। उल्लेखनीय है कि मजूमदार 'हो' जनजाति के बीच तीन वर्षों तक रहे और 1937 में इस पर आधारित पुस्तक **'संक्रमण के दौर में एक जनजाति'** की रचना की। लगभग बारह वर्ष पश्चात् (1947–49) उन्होंने इस जनजाति का पुर्नअध्ययन किया और इस अवधि में हो जनजाति पर आस–पास की खानों, कारखानों और युद्ध के पड़े प्रभावों का आकलन कर 1950 में एक अन्य पुस्तक 'एक जनजाति का जन जीवन' की रचना की। मजूमदार ने जनजातियों के सामाजिक जीवन के अध्ययन के अतिरिक्त उनके धर्म का भी गहन अध्ययन किया जिसमें भारतीय जनजातियों में 'मैरिट' के जीव सत्तावाद के लक्षणों को उपस्थित पाया है। उनके अनुसार मैलेनेशिया के लोगों की भाँति ही भारतीय जनजातियाँ (विशेषतः हो और मुण्डा) भी 'माना' जैसी एक आलौकिक, अदृश्य एवं अवैयक्तिक शक्ति में विश्वास प्रकट करती हैं जिसे वे 'बोंगा' कहती हैं। इसी आधार पर उन्होंने 'बोंगावाद' के विचार को प्रणीत किया। मजूमदार ने भारतीय संस्कृति को समझने के लिए 'मार्क' की अवधारणा प्रस्तुत की है। अंग्रेजी के शब्द MARC से उनका अर्थ Man (मानव), Area (क्षेत्र), Resources (संसाधन) और Cooperation (सहयोग) से है। मजूमदार के अनुसार ये चार स्तम्भ हैं जो

भारत की संस्कृति का निर्माण करते हैं। भारतीय संस्कृति को समझने हेतु इन चार तत्वों को समझना आवश्यक है।

मजूमदार ने अपनी बहु प्रसिद्ध पाठ्यपुस्तक (1957), जो इन्होंने टी0एन0 मदन के साथ लिखी थी में भारतीय जनजातियों की समस्याओं के गहन विवेचन के साथ–साथ उनका वर्गीकरण भी प्रस्तुत किया है। अग्रणी मानवशास्त्री मैलिनोस्की एवं शरतचन्द्र रॉय से गहन रूप से प्रभावित मजूमदार एक परिश्रमी एवं धैर्यवान क्षेत्र कार्यकर्ता थे वे सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्र की शोध–परम्परा के एक अनुभववादी (एम्पिरिशिष्ट) मानवशास्त्री थे। किसी जनजाति अथवा गाँव के अध्ययन हेतु वे लम्बे समय तक उस क्षेत्र की यात्राएँ करते थे और वहां रहकर प्राथमिक सामग्री जुटाते थे। जनजातीय एवं लोक बोली को सीखने में उनकी गहरी रूचि थी। उन्होंने जनजातियों की समस्याओं को जानने की अपेक्षा उनके सांस्कृतिक पक्षों आर्थिक, नातेदारी शोध अध्ययनों में संरचनात्मक प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य को अपनाया और जनजातीय अध्ययनों के अतिरिक्त इसी उपागम का प्रयोग किया है (रावत, हरिकृष्ण : 2014, पृ0 293–294)। मजूमदार की अध्ययन पद्धति उनके ग्रामीण, जनजातीय एवं जातीय अध्ययनों में प्राथमिक तथ्यों, क्षेत्रकार्य पर आधारित नृती जाति शास्त्रीय रही है। वस्तुतः नृजाति शास्त्रीय अध्ययन पद्धति पचास के दशक में भारतीय समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र में प्रचलित अत्यंत लोकप्रिय पद्धति रही है। किसी समाज के प्रथानुगत व्यवहारों, विश्वासों एवं मनोवृत्तियों का विस्तृत वर्णनात्मक लेखा जोखा तैयार करने की विधा नृजाति लेखन कहलाती है। सांस्कृतिक मानवशास्त्र की यह शाखा सामान्यतः आदिम अथवा पूर्व शिक्षित समाजों के विवरणात्मक अध्ययनों से सम्बन्धित है। ज्ञान की इस शाखा में विश्लेषण एवं व्याख्या की अपेक्षा वर्णन को प्रमुखता दी जाती है। इसमें विश्लेषणात्मक समान्यीकरण अथवा सिद्धान्त रचना का कोई प्रयास नहीं किया जाता है। नृधा जातिलेखन में बहुधा सहभागी अवलोकन की शोधविधि का प्रयोग किया जाता है (रावत, हरिकृष्ण : 2007, पृ0 155–156)

स्पष्ट है कि डी0एन0 मजूमदार द्वारा निष्पादित किये गये नृ–जाति विवरणात्मक अध्ययन अपने वाले समय में मानवशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय शोधों के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगे।

सन्दर्भ –

1. मदन, टी0एन0 तथा सरन, गोपाल : 1962, इंडियन एंथ्रोपॉलॉजी एसेज इन मेमोरी ऑफ डी0एन0 मजूमदार, एशिया पब्लिसिंग हाउस, बम्बई।
2. माथुर, कृपा शंकर : 1958, प्राच्य मानववैज्ञानिक, वॉल्यूम–3 उ0प्र0 लोक सांस्कृतिक सभा, लखनऊ।
3. मजूमदार, डी0एन0 : 1959, कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. मजूमदार डी0एन0 1960, छोर का एक गाँव (अनु0 चन्द्र भाल त्रिपाठी), एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई।
5. रावत, हरिकृष्ण; 2014, समाजशास्त्रीय चिन्तक एवं सिद्धान्तकार, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
6. रावत, हरिकृष्ण : 2007, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशंस जयपुर।